

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ASHA ARCHIVES

2042

I

यथा... स... व... स... न...
अ... ल... ह... क... त... न...
... ल... स... न... य...
... पु... न... दी... स्त... दा... न... क... क...
... अ... न... स... त... म... स... य... इ... ते...
वः स्वः ॥ कौ... त... न... ॥ ५४ ॥ अ... का ३ ॥ र... न... व... न... अ...
... न... प... व... ती... ता... गो... न... र... स... न...
... ने... न... य... ॥ ॥ ह... र... ॥ ... ॥

मि... अ... अ... न... ल... ते... त... के... स... ल... य...
... वि... सि... अ... सु... र... मि... सि... पु... न...
दा... सि... पु... र... सा... धा... य... ता...
... ते... न... ल... न... अ... न... न... दि... य... स... गु... रा... शी... र्वा... च... न... अ... य...
... सि... पु... ल... न... वि... दा... स... पु... रा... अ... दि... न... दी... र्वा... पु...
... ते... पु... का... न... स... लि... का... य... स... य... सा... दि... ॥ ॥ दि... दि...
... न... पु... वे... वि... य... इ... दि... के... न... वि... वि... स... मा... ॥ ॥ सा... का... गु...
... र... र... र... र... र... र... र... र... र... र... र... ॥ ॥

आद्यै निनखरु स

॥ सुखं लब्धं ॥ अथ के गुणानि ॥ लुत्ता विष्णो न का
 लशा ॥ १ ॥ सुखं लब्धं लुत्ता सुखं लब्धं लुत्ता
 जर सुखं लब्धं लुत्ता

विष्णुसहस्रनाम

• SHA ARCH! 45

2042

11

शंखं कदा लभुषि रवयुधरा च
 शंखं विरवयुधरा कृतं जुगेनास्तेति नारायणं त्रेता
 यांति युगं ज्येते विभुवर्गो विष्णुसुमरं विष्णुभुवर्ग्याम्
 निभो हिरावतवधेशम्यजुगे द्वायरे नित्यं कर्जलसन्नि
 भं कलिजुगे मायातु दानोदरः ॥ आद्यैर्मिन

भा

उ

रस्त

सुवर्णीरेतासुरश्चष्टपाकृष्णातुष्टेदश ॥ शंतुमिमिरनाशायदादशप
 रि कीर्तिता ॥ रक्ताक्षारक्तनिभाश्च सिंदूररुणा विग्रहा ॥ तपनस्तापनश्चै
 वकर्त्ता सर्वग्रहेश्च रा लोकगाधि त्रिलोके शयोमष्टपाधिवाकरः ॥
 अग्निगर्भो मया विष्टः स्वर्गः स्वप्नाश्च वाहनः जलहस्तमहतेतज्ज
 विद्योयनुः साममंगरीः ॥ मण्डलाकालपिष्टश्च मूलस्यानेचभा
 नवे ॥ यस्मरेति सदा नित्यं तस्य रोग भयं कुतः ॥ अष्टकीर्तिकाल
 स्तेन सर्वपापहरं परं कथयामिनसं दह आदित्यस्य महात्म

ॐ

ने ॥ ए प्र जा प्र स्व हो म स्व र्ण ध्या पा स न मे व च ॥ सर्व शान्ति कर च व
व सर्व विघ्न विनाश नै ॥ न श ये सर्व रोगाश्च तू दा वि स्फोट का द य
काम ला धि स्त था रोगा अ री रोगाश्च दा ह रणा ॥ ए का हि कं ड्या
हि कं च तथा त्रि दि व स ज्व रः ॥ चा तु र्थ के त था लु खं तथा
च श त त ज्व रं ॥ क ष्ट रोगं पा णु रोगं कु क्षि रोग श्च य स्त था ॥ अ
रु म ही मु त्र क्क ण् च ना ना व्या धि भ यं तथा ॥ न र य न्ति स क लो र
गाः सर्व षु ये ह सं भ वा ॥ म र्द म र्द म हा म र्द रोगा म र्द तु वे

द ना ॥ वि ल यं या न्ति तो नि त्प्य आ दि त्यो चा र तो न तु ॥ र
क्ष र क्ष म हा दे व य ह रोग भ ये षु च ॥ उ श म यानु ते स र्व की
र्त्ति त स्य दि वा क र ॥ ॥ न सो म चो भि त्र य ग्ग ही त्वा सु र्या व र्ति
क ॥ श ता व त्तं कु रो न तु ॥ त स्या पं ठ त मा त्रे न न रोगाः पु सु
च ते ॥ न दा त र्यं न व क्त र्यं गो पि त र्यं पु य न्न तः ॥ क तु तै ल
स मा यु क्तं न स्य या न पु दा प ये त ॥ त्रि हा न य्य त्रि स्रं ध्या र्था
हो म क र्मा दि ने दि ने ॥ न य्य मा ने न त स्य त्रे त स्य रोगा पू ह

